अंक 25

" आवी मलवा बेवाड़ी दरवा "

वातें वाग्धारा नी

जून, 2022

VAAGDHARA

आदिवासी किसान भाई बहनों,संगठन के साथियों,मेरे स्वराज मित्रों,स्वयं सेवकों तथा प्यारे बच्चों सभी को

जय गुरु !!!

आप सभी को आने वाली बरसात व फसल की तैयारी के लिए शुभकामनाएं ।

आशा है आप सभी लोगों को शादी व नोतरे से अब कुछ आराम मिला होगा, जिससे अब आप वापस कृषि कार्यों में लग चुके होंगे । आज के इस अंक में मैं आपसे कुछ विशेष रूप से बात करने वाला नहीं हूं क्योंकि हमारी बहुत सारी चर्चाएं हो चुकी है और अब मैं यह चाहूंगा कि 25 वे अंक के माध्यम से हमारे पास जो बातें हैं वह बातें हम तक सीमित न रहकर आगे पहुंचाई जाए चूँकि यह ज्ञान हम तक ही रहेगा तो इसका लाभ भी सीमित ही रहेगा और अगर हम इसे आगे तक पहुंचा पाते हैं तो हो सकता है कई परिवार इससे लाभान्वित हो । इसीलिए मेरा आप सभी से आग्रह है कि हम सब इस ज्ञान को किस प्रकार से आगे तक ले जा पाए इस पर विचार करें साथ ही सक्षम समुह की महिलाएं अपने विचारों को अपने कृषि कार्यों की बातों को आगे तक बढ़ाती है तो हमारे लिए बहुत महत्वपूर्ण होगा इसी के साथ एक विषय जो हमारे लिए महत्वपूर्ण था और जो अक्सर चर्चा में आता है कि हम हमारे संगठन में कितनी सकारात्मक भागीदारी निभा पा रहे हैं यह एक सोचने का विषय है । क्योंकि अगर संगठन कमजोर होगा तो आपकी बातें कमजोर होगी,आपके विचार कमजोर होंगे और आपकी प्रक्रिया धीमी हो जाएगी इसी प्रक्रिया को बरकरार रखने के लिए हमें हमारी सकारात्मक भागीदारी निभानी होगी ।

संपादकीय में यह सभी विषय कहने का कारण यह है कि मेरे पास और कोई जगह नहीं है जिसमें मैं आपसे यह आग्रह कर पाऊ । चूँकि पिछले कुछ समय से कई अतिथि हमसे मिलते है हमारे क्षेत्र में घूमते हैं तो सभी का एक प्रश्न मुझसे होता है कि आपके यहां की मिट्टी अच्छी है,हवा अच्छी है,यहां पर पानी की कोई कमी नहीं है,जंगल है,अच्छे विचारों के लोग हैं और साथ ही मेहनत करने वाले लोग है जो परिवर्तनकारी बन सकते हैं उनका कहना होता है कि आपके यहां मामा बालेश्वर दयाल हुए, गोविंद गुरु हुए, हरिदेव जोशी हुए आपके यहां ऐसे परिवर्तनकारी युगांतरकारी लोग हुए, माही नदी पर बांधने वाला इतना बड़ा बांध अगर आपके यहां बन गया तो आपके जिले में भरपूर संभावना है कुछ बदलाव लाने की आपके जनजाति क्षेत्र में प्रचुर संभावना है । आपके मध्यप्रदेश और गुजरात में भरपूर संभावना है तो हम कहां चुक रहे हैं,किसलिए चुक रहे हैं,किस प्रकार से चुक रहे हैं यह हमारे लिए एक बड़ा विषय है, हम इसे किस प्रकार से देखेंगे यह हमें सोचना होगा ।

मैं आप सभी से आग्रह करना चाहता हूं कि हम इस विषय पर पुनः सोचे,विचार करें कि हम किस प्रकार से हमारी बातों को मजबूती से परिवर्तनकारी कर पाए और एक विचार मेरे मन में आता है कि वाग्धारा के जो संदेश है सच्ची खेती,सच्चा बचपन,सच्चा स्वराज को लेकर इससे आगे भी हमारे कई सारे स्वराज के तरीके और सपने हो सकते हैं। हो सकता है वो इस पत्रिका में नहीं आ रहे हो,हो सकता है वह साथियों के साथ चर्चा में नहीं आ रहे हो तो हमें समुदाय में उसे ढूंढना होगा बात करनी होगी हमें सामूहिक नेतृत्व सामूहिक कार्य में विश्वास करना होगा हमें परिवर्तनकारी उदाहरण बनाने होंगे ।

मेरा यह हमेशा जोश या आग्रह का संदेश इस आशा में होता है कि किसी महीने में,किसी गांव से,किसी संगठन से मेरे पास ये खबर आए कि आपकी “वाते वाग्धरा नि पत्रिका” को पढ़कर हमने हमारे गांव में यह कदम उठाया है । मैं इस 25 वे अंक के इस संदेश की सफलता इसी से ही आंकता हूँ कि कोई संगठन का पदाधिकारी,कोई बहन,कोई स्वराज मित्र,कोई सहजकर्ता मुझे प्रतिक्रिया देगा तो मैं यह मान लूंगा कि आप सही मायनों में इसे पढ़ रहे हो,इसे काम में ले रहे हो । अन्यथा हमें इसका अगला अंक निकालने में सोचना होगा विचार करना होगा यह सही में परिवर्तनकारी है या सिर्फ कागजों की रद्दी है ।

शायद मेरे यह शब्द आपको कटु लगे परंतु इस देश और दुनिया में बदलाव के कई प्रयास हुए अगर सभी प्रयास अमल में आए होते तो शायद ये दुनिया अलग खुशहाल होती आनंद होता बच्चे भुखमरी के शिकार नहीं होते,बहनों की इज्जत सुरक्षित होती,गरीबी नहीं होती,समतामूलक समाज होता और असमानता नहीं होती परंतु इन विचारों को किताबों मे पोथीयो तक छोड़ दिया गया इन उदाहरणों को हमारे अपनों तक पहुँचनें से रोक लिया ।मैं उदाहरण देता हूं 25 साल पहले शेखर साहब ने जिन बच्चों को पढ़ाने के लिए प्रयास किया आज वह हमारे जिले में कई सारे डॉक्टर, इंजीनियर बन रहे हैं परंतु आज भी हमारे जिले में कई बच्चे शिक्षा से वंचित होते हैं । कुपोषण को दूर करने के लिए कई प्रयास हुए परंतु आज भी कई बच्चे कुपोषित होते हैं, कृषि में सुधार के लिए कई प्रयास हुए आज से कई साल पहले घाटोल के पास गांव गडरा में सामूहिक आम लगाए थे यह सामूहिक प्रयास का एक सबसे बड़ा उदाहरण था लेकिन हम उसे भूल गए हैं ।

मैं आपसे आग्रह करना चाहूंगा कि आप मेरे इस आग्रह को सुनें समझे और समुदाय में इसे अमल में लाने का प्रयास करें

धन्यवाद जय हिंद

आपका अपना
जयेश जोशी

पशुपालन में टीकाकरण की आवश्यकता

पशु हो या मनुष्य उनमें टीकाकरण के क्या फायदे हैं। इसकी जागरूकता होना जरूरी है। सबसे पहले हमें दो शब्दों का मतलब पता होना जरूरी है- एक है ''उपचार'' दूसरा ''रोकथाम ''। पशुओं में बीमारी होने के बाद दवाईयों द्वारा जो इलाज किया जाता है उसको ''उपचार'' कहते हैं। और पशुओं में संक्रमक बीमारियाँ न फैले उसके लिए ऐतिहात के तौर पर पहले से ही जो टीके लगाए जाते हैं उसको रोकथाम कहते हैं।

टीका क्या है ?

टीका एक स्वास्थ्य उत्पाद है जो कि पशुओं की प्रतिरोधक क्षमता को बढाता है एवं विभिन्न रोगों से सुरक्षा प्रदान करता है। टीकाकरण के द्वारा पशुओं को आने वाले समय में संक्रामक बीमारियों के बचाया जा सकता है। संक्रामक रोगों के कई कारक है- जीवाणु, विषाणु, परजीवी, इत्यादि। टीका इन विभिन्न तरह के रोगों से लड़ने के लिए शरीर को तैयार करता है। प्रत्येक रोग का टीका अलग होता हैं। एक रोग का टीका दूसरे रोग से बचाव नहीं कर सकता।

टीकाकरण का क्या महत्व है ?

यदि पशुपालक आर्थिक लाभ चाहते हैं तो पशु स्वास्थ्य एवं टीकाकरण का महत्वपूर्ण स्थान है। प्रतिवर्ष हजारों दुधारू पशु खतरनाक संक्रामक बीमारियों के कारण मर जाते हैं जिससे आर्थिक नुकसान होता है। बहुत से जीवाणुजनित रोग लाइलाज है तो इनका एक ही विकल्प है''टीकाकरण के द्वारा रोकथाम''है । पशु पालकों का यह कर्तव्य बनता है कि पशु चिकित्सक की सलाह लेकर वह अपने पशुओं का उचित समय एवं उचित आयु में टीकाकरण करवाना जरुरी है । टीके कभी भी पशुओं के शरीर पर कोई दुष्प्रभाव नहीं डालते हैं। गर्भिन पशुओं में भी टीके का कोई दुष्प्रभाव नहीं है।

नियमित टीकाकरण द्वारा पशुपालक न सिर्फ दवाईयों पर होने वाले खर्च को कम कर सकते हैं बल्कि एक बेहतर उत्पादन भी प्राप्त कर सकते हैं।

टीकाकरण फायदे -

- टीकाकरण संक्रामक रोगो से जानवरों की रक्षा करता है।
- टीकाकरण के द्वारा पशुओं से मनुष्यों में फैलने वाले रोगों को भी रोका जा सकता है।
- टीकाकरण रोगों से जुड़े उपचार की लागत को कम कर किसानों पर आर्थिक बोझ को कम करने में मदद करता है।

साथ ही पशुओं में टीकाकरण पूरे वर्ष क्षेत्र एवं मौसम के हिसाब से किया जाता है, और पशुओं में टीकाकरण की असावधानियों से बचने के लिए टीकारण कार्यक्रम पशु चिकित्सक की निगरानी में ही करवाना चाहिए।

टीकों के इस्तेमाल में सावधानिया-

- टीका किस उम्र में लगाना है इसका ध्यान रखना जरूरी है। गलत उम्र में टीका लगाने पर उसका प्रभाव कम हो सकता है।
- उचित मौसम में टीका किस मौसम के पहले या किस माह में लगाना है इसे ध्यान रखना जरूरी है ।
- टीका खरीदने के बाद साफ जगह पर रखें, उचित तापमान पर उसका संग्रहण करें, और टीके की मात्रा भी निश्चित होती है। यदि मात्रा कम होगी तो उसका सही प्रभाव नहीं मिलेगा।
- टीकाकरण कार्यक्रम अधिकतर सुबह के वक्त ही रखा जाता है। तेज गर्मी, सूर्य की तेज रौशनी से टीका खराब हो सकता है। जिन पशुओं का टीकाकरण किया गया है उसका प्रमाणपत्र होना चाहिए।उनको कौन-कौन से टीके लगाये गए है उसका लेखा होना चाहिए।
- रोगी एवं दुर्बल पशुओं में टीकाकरण न करे। पशुओं का टीकाकरण प्रभावशाली हो इसलिए पशुओं का अच्छा रखरखाव करें। पशुबाड़ों में साफ-सफाई रखें । टीकाकरण किए गये पशुओं को बिना टीका दिये गए पशुओं या बीमार पशुओं से अलग रखें।
- टीकाकरण के तुरंत बाद पशुओं को ज्यादा व्यायाम न करवाए, खराब मौसम से भी बचाव करें। जंहा तक हो सके, टीकाकरण के बाद दो सप्ताह तक अन्य दवाईयों का उपयोग न करें।

पशु उपचार से बेहतर है रोकथाम जो कि सिर्फ टीकाकरण के द्वारा ही संभव है। परंतु टीकाकरण तभी सफल होगा जब सावधानीपूर्वक किया जाए। पशुओं में विभिन्न रोगों से बचाव के लिए टीकाकरण उचित आयु, उचित मौसम, उचित समय, उचित मात्रा में, उचित जगह पर, उचित मार्ग से तथा उचित टीकों के प्रयोग द्वारा ही संभव है।

पशुओ की मुख्य बीमारिया व उनके लक्षण -

पशु प्लेग

यह बीमारी पोकानी, पकावेदन, पाकनीमानता, वेदन आदि नामों से गांव में जानी जाती है। यह रोग सभी जुगाली करने वाले पशुओं में होता है। इस रोग में तेज बुखार, भूख न लगना, दुग्ध उत्पादन में कमी होना, जीभ के नीचे तथा मसूड़ों पर छालों का पड़ना आदि प्रमुख लक्षण होते है। इस रोग में पशु की आंखे लाल हो जाती है। तथा उनमें गाढ़े – पीले रंग का कीचड़ बहने लगता है। खून से मिले पतले दस्त तथा कभी – कभी नाक तथा योनि द्वार पर छाले भी पड़ जाते हैं। रिंडरपेस्ट एक प्रकार का विषाणुजनित (वायरस) रोग है। यदि किसी पशु में इस रोग के लक्षण दिखाई देते है तो तुरंत पशु चिकित्सक से संपर्क करना चाहिए। इस बीमारी से बचाव के लिए पशुओं का सामायिक टीकाकरण कराना अति आवश्यक होता है।

खुरपका – मुहंपका रोग

यह एक विषाणुओं से फैलने वाला संक्रामक रोग है जो कि सभी जुगाली करने वाले पशुओं में होता है। यह रोग गाय, भैंस, भेंड, बकरी, सुअर आदि पशुओं को पूरे वर्ष कभी भी हो सकता है। संकर गायों में यह बीमारी ज्यादा फैलती है। इस रोग से पीड़ित पशु के पैर से खुर तक तथा मुंह में छालों का होना, पशु का लंगडाना व मुहं से लगातार लार टपकाना आदि इस रोग के प्रमुख लक्षण होते हैं। यह एक प्राणघातक रोग भी है। रोगी पशु की सामायिक चिकित्सा न करने से उसकी मृत्यु भी हो सकती है। इस रोग से बचाव के लिए प्रत्येक छः माह के अन्तराल पर पशु का टीकाकरण करवाना चाहिए तथा पशु में रोग फैलने की स्थिति में तुरंत पशु चिकित्सक से संपर्क करना चाहिए।

गलघोंटू

यह एक प्रकार के जीवाणुओं से फैलने वाला रोग है। अंग्रेजी भाषा में इस रोग का नाम हिमोरेजिक सेप्टीसीमिया है। इसलिए इसको संक्षिप्त रूप में एच. एस. नाम से जाना जाता है। यह एक घातक छूत का रोग है। इस रोग को घुड़का, घोटुआ, घुरेखा, गलघोटु आदि नामों से भी जाना जाता है। यह बीमारी मुख्यतया गाय एवं भैंसों में होती है। बरसात के समय इस बीमारी का अधिक प्रकोप होता है। इस रोग का जीवाणु मल – मूत्र तथा नाक के स्राव द्वारा अन्य पशुओं में फैलता है।इस रोग का प्रमुख कारण पशु के गले व गर्दन की सूजन होना, शरीर गर्म एवं दर्दयुक्त, सूजन से श्वसन अंगों पर दबाव, तेज बुखार, पेट फूलना, गले में घुटन के कारण श्वांस का रूकना, नाक व मुंह से पानी आना आदि होते है। इस रोग में कुछ ही घंटों में पशु की मौत भी हो जाती है। पशु की प्राण रक्षा के लिए सुनियोजित व तात्कालिक उपचार की आवश्यकता होती है। अतः रोग के लक्षण प्रकट होते ही पशु चिकित्सक से सम्पर्क करना चाहिए। इस रोग से बचाव के लिए पशुओं में प्रतिवर्ष टीका लगवाना चाहिए। बरसात प्रारंभ होने के एक माह पूर्व ही पशुओं को इस बीमारी से बचाव का टीका लगवा देना चाहिए।

गिल्टी रोग

यह एक बहुत ही भयंकर जीवाणुओं से फैलने वाला रोग है। गांवों में इस घातकछूत रोग को गिल्टी रोग के अतिरिक्त जहरी बुखार, प्लीहा बुखार. बाघी आदि नामों से भी जाना जाता है। अंग्रेजी भाषा में इसे एंथ्रेक्स कहते है। यह बैसिलस एंथ्रेक्स नाम जीवाणु से फैलता है। यह बीमारी गाय – भैंस, भेड़ बकरी, घोड़ा आदि में होती है स्वस्थ पशुओं में यह रोग रोगी पशु के दाने – चारे बाल - ऊन, चमड़ा, श्वांस तथा घाव के माध्यम से फैलता है।इस रोग में पशु के जीवित बचने की संभावना बहुत कम रहती है यह रोग गाय भैंस के अलावा बैलों में भी फैलता है। इस रोग के जीवाणु चारे – पानी तथा घाव के रास्ते पशु के शरीर में प्रवेश करते है और शीघ्र ही खून (रक्त) के अंदर फैलकर रक्त को दूषित कर देते हैं। रक्त के नष्ट होने पर पशु मर जाता है। रोग के जीवाणु पशु के पेशाब, गोबर तथा रक्तस्राव के साथ शरीर से बाहर निकलकर खाने वाले चारे को दूषित कर देते है जिससे अन्य स्वस्थ पशुओं में भी यह रोग लग जाता है। अतः इन रोगी पशुओं को गांव के बाहर खेत में रखना चाहिए। रोग का गंभीर रूप आने पर पशु के मुहं, नाक, कान, गुदा तथा योनि से खून बहना प्रारंभ हो जाता है। रोगी पशु कराहता है व पैर पटकता है। बीमारी की इस स्थिति में आने पर पशु मर सकता है। यह ध्यान रहे कि रोगी पशु को बीमार होने पर कभी भी टीका नहीं लगवाना चाहिए।

लंगड़िया रोग

इस बीमारी को अलग – अलग क्षेत्र में लंगड़ी, सुजका, जहरवाद आदि नामों से भी जाना जाता है। यह गाय एवं भैंस की छूत की बीमारी है। यह बीमारी बरसात में अधिकतर फैलती है। स्वस्थ पशु में यह बीमारी रोगी पशु के चारे – दाने या पशु के घाव द्वारा फैलती है।पशु में अचानक तेज बुखार आना. पैरों में लंगड़ाहट है उसमें सूजन आना, भूख न लगना, कब्ज होना, खाल के नीचे कहीं – कहीं चर की आवाज होना तथा दूध का फटना आदि इस बीमारी के प्रमुख लक्षण है। इस से बचाव के लिए वैक्सीन के टीके प्रतिवर्ष लगवाना चाहिए। बछड़े तथा बछियों को छः माह की आयु में वर्षा ऋतु से पूर्व ही टीका लगवा देना चाहिए। यह टीका 3 वर्ष की आयु तक ही लगाया जाता है। रोग के लक्षण प्रकट होते ही पशु चिकित्सक की सहायता ली जानी चाहिए।

आपके पोषण उद्यान में पत्तेदार सब्जियां, फल सब्जियां, फलियां, कंद, मसाले और औषधीय पौधे होने चाहिए।

सच्चा बचपन

पौषण और स्वास्थ्य की देख-रेख मेरे जीवन की पहली प्राथमिकता है

लक्षण

- त्वचा का शुष्क, लाल या गर्म होना, बेहोशी या भ्रम की स्थिति
- व्यवहार में चिड़चिड़ापन
- बच्चे की धड़कन, पल्स व सांसों का तेज होना
- सिरदर्द, चक्कर आना और उल्टी होना
- कमजोरी का एहसास
- बुखार आने से शरीर का तापमान 104 डिग्री फारेनहाइट से अधिक होना

कारण

शरीर में पानी की कमी का होना हवादार जगह का अभाव, ज्यादा समय तक धूप में रहने से,बच्चाऐसी किसी जगह में है जहां काफी गर्मी है,

बच्चों को लू लगने पर क्या करें

- सबसे पहले डॉक्टर को कॉल करें और उनसे परामर्श लें।
- बच्चे के सारे कपड़े उतार दें या उसे कम कपड़ों में रहने दें।
- बच्चे को किसी छाया,हवादार और ठंडी जगह में ले जाएं।
- बच्चे के शरीर का तापमान नीचे लाने के लिए ठंडे पानी की पट्टियां उसके सिर, हाथ व पैर पर रखें।
- समय-समय पर पानी पिलाएं। अगर बच्चा बेहोश हो गया है, तो उसे कुछ भी न पिलाएं।

बच्चों को लू लगने पर घरेलू उपाय

- प्याज के रस को हाथ-पैर, छाती और कान के पीछे लगाकर शरीर के तापमान को थोड़ा कम किया जा सकता है
- कच्चे आम से बना पन्ना बच्चे को दिनभर में दो से तीन बार पिलाकर भी उसकी बॉडी की हीट को कुछ कम कर सकते हैं।
- दिनभर में दो से तीन बार छाछ पीने की सलाह दी जाती है |
- खीरे को सलाद के रूप में खाया या फिर इसका जूस बनाकर बच्चे को पिला सकते हैं

"संस्कृति और रीति रिवाजों के साथ आगे बढ़ना है"

5 से 17 साल के बच्चे ऐसे कामों में लगे हुए हैं जो उन्हें सामान्य बचपन से वंचित करते हैं और शिक्षा और स्वास्थ्य से दूर करते हैं.
काम में लगे 5 से 17 वर्ष की आयु वर्ग के बच्चे सामान्य बचपन, उचित स्वास्थ्य देखभाल, पर्याप्त शिक्षा, खाली समय और बुनियादी स्वतंत्रता से वंचित हो जाते हैं।

इस अधिकार के तहत बच्चे को हर तरह की उपेक्षा,क्रूरता और शोषण से सुरक्षा मिल सके बच्चे के लिए विशेष देखरेख, दांडिक न्याय प्रणाली में बच्चों के उत्पीड़न, बाल मज़दूरी, ड्रग उत्पीड़न, एवं शोषण के खिलाफ सुरक्षा हो |

बाल श्रम के खिलाफ विश्व दिवस को चिह्नित करने का मूल उद्देश्य यही है।इस दिन का उद्देश्य दुनिया भर के लोगों के ध्यान में बाल श्रम की समस्या को लाना भी है।

समाज के हर वर्ग और हर स्तर की यह विशेष ज़िम्मेदारी बनती है बाल अधिकारों का हनन ना करें और ना ही किसी और को करने दें | ताकि बच्चे अपने सपनों और बचपन को ना खोएं |

ग्रामीण भारत में छोटी उम्र में विवाह कर देने से लड़कों पर घर चलाने की जिम्मेदारी भी उसे श्रमिक बना देती है ।
माता-पिता का असंतोष, लालच, अशिक्षित होना बाल श्रम जैसे अपराध को बढ़ावा देता है | बड़े-बड़े कारखाने जैसे-कोयला खदाने,हीरा खदाने.पत्थर/गिट्टी/ईट की खदान जैसी जगहों पर बाल श्रम बहुतायत में पाया जाता है
बच्चों को बाल श्रम से इसलिए जोड़ दिया जाता है, क्योंकि उनका आसानी से शोषण किया जा सकता है।अशिक्षित अभिभावक अपने बच्चे की शिक्षा एवं विकास को महत्व नहीं देते ।
बाल श्रम अक्सर वेश्यावृत्ति और मादक पदार्थों की तस्करी से जुड़ा होता है।

"मेरे भी विचार है, मुझे भी कुछ कहना है"

समुदाय की भूमिका:-
बच्चों को अपने मत रखने का अधिकार दें
बच्चों के अधिकारों को ध्यान में रखते हुए सार्वजनिक स्थलों पर खेल-कूद व्यवस्था की जानी ज़रूरी है |

पंचायत स्तर एक बाल केन्द्रित रिसोर्स केंद्र की व्यवस्था की जानी ज़रूरी है ताकि बच्चों को अधिकाधिक सीखने के अवसर उपलब्ध हो सकें |

शाला स्तर पर बालसभा में बच्चों से जुडी समस्याओं पर चर्चा की जाए | और ऐसी समस्याएं जिनके कारण बाल अधिकारों का हनन हो रहा है की चर्चा ग्राम सभा में किया जाए और वहाँ पर सम्बन्धित निर्णय भी लिए जा सकें

VDCRC स्तर पर बच्चों के समूहों को साथ लेकर अलग-अलग गतिविधियों का आयोजन किया जाये ताकि बच्चों को मुखरित होकर अपनी बात को आत्मविश्वास के साथ रखने में सहजता महसूस हो |

भेदभाव रहित सुखद वातावरण भी जरूरी है

अभिभावकों की भूमिका

अनिवार्य और मुफ्त शिक्षा बच्चों का अधिकार है बच्चों को शिक्षा से जोड़ें |
थोड़े से पैसे के लालच में बच्चों के जीवन से खिलवाड़ ना करें |
बच्चों को विकास करने के लिए पर्याप्त मात्रा में आराम और खेलने की भी जरूरत होती है इसका पूरा-पूरा ध्यान रखें |
बच्चों को ठीक से पोषण मिल सके इसका पूरा ख्याल रखें
ग्रीष्मकालीन अवकाश के समय में समुदाय स्तर पर समूह बनाकर बच्चों के लिए कैंप का आयोजन कर रचनात्मकता से जोड़ें |

बच्चा शिक्षा से पूरी तरह से वंचित हो जायेगा

बच्चे का शारीरिक, मानसिक और बौद्धिक क्षमता का विकास नहीं हो पायेगा
बच्चा निर्णय लेने की क्षमता का विकास नहीं कर पायेगा

समुदाय की भूमिका:-

अपने आस-पास हो रहे बाल श्रम को रोकें
माता-पिता और परिवार के अन्य सदस्यों को बच्चों को विद्यालयों से जोड़ने के लिए प्रेरित करें |
समुदाय में होने वाले बच्चों के बाल विवाह को रोकें क्योंकि बाल विवाह होने से भी बाल श्रम को बढ़ावा मिलता है

सरकार की भूमिका:-

बाल श्रम निषेध अधिनियम की कड़ाई से पालना की जाए |
बच्चों का विद्यालयों में ठहराव सुनिश्चित करने के लिए प्रक्रियाओं को आसन बनाये |
कक्षा-कक्ष स्तर पर सीखने-सिखाने की प्रक्रियाओं को सरल, रोचक और बाल केन्द्रित बनाने में सहयोग करें | बाल अधिकारों का हनन होने से रोकना सरकार की प्राथमिक ज़िम्मेदारी में आता है अतः इसका पूरी तरह से ध्यान रखा जाए |

चाइल्ड लाइन 1098 वाग्धारा की चौपाल से बारह नाबालिग दिव्यांग बालक-बालिकाओ को मिला अपना हक

टीम एवं सम्बन्धित कार्मिकों को प्रशासन ने आदेश जारी कर सहयोग एवं सरकार की योजनाओ से जोड़कर प्रशासन एवं सरकार को अवगत करवाने कि दी जिम्मेदारी

चाइल्ड लाइन 1098 वाग्धारा कि टीम एवं प्रशासन के द्वारा बारह नाबालिक बालक-बालिकाओ का चिन्हिकरण कर दस्तावेज तैयार करने में जुटी टीम एवं प्रशासन

प्रशासन को जानकारी मिलते ही विभागीय अधिकारीगण ने गांव में पहुंचकर समस्त दिव्यांगो की ली जानकारी

चाइल्ड लाइन 1098 वाग्धारा कि जन जागरुकता चैपाल में आठ से दस दिव्यांग नाबालिक बालक-बालिकाओ को सरकार के जनकल्याणकारी योजनाओ का लाभ नही मिलने कि जानकारी से अवगत करवाया कि उम्र के दस से पन्द्रह वर्ष गुजरने को आये परन्तु जन्म से दिव्यांग होने पर भी अभी तक नही हो रही सुनवाई।

पॉच दिव्यांग बालक-बालिकाओ के विकलांगता प्रमाण पत्र के लिए ऑनलाइन फार्म भरवाया गया दो बालक-बालिकाओ के जनआधार कार्ड में सुधार करवाया गया एक दिव्यांग को आधार कार्ड बनवाने के लिए आदेश जारी किया क्योकि उसके हाथ एवं पैर कि उंगलिया गल चुकी थी। चार बालक-बालिकाओ को पालनहार योजना से जोड़ा एवं एक दिव्यांग को तत्काल व्हीलचेयर दिलवाई ।

अपने खेत में मक्का, बाजरा, ज्वार और अरहर एक साथ बोएं।

जनजातीय स्वराज संगठन सहयोग इकाई की गतिविधियाँ

माही

माही जनजातीय स्वराज संगठन ईकाइ की और से सभी पाठ्कों को जय गुरु

साथियों जैसा की मौसम विभाग द्वारा अनुमान लगाया गया है कि 20 जून के आस पास मानसून आने की पूरी पूरी संभावनाऐं है। हमारी सक्षम समूह की बहनें अपने आस पास के जंगल, घर के नजदीक खेतों की मेड़ पर पहली बरसात में बनाऐं गए सीड बोल को उपयोग में लेना है एवं एक दूसरे से बीजों का आदान प्रदान कर मदद करनी है। हम आशा करते है कि हमारे आस पास की जल स्त्रोतों में भरपूर पानी आए इसके साथ ही हमें सभी जल स्त्रोतों की देखभाल भी करनी है। ताकि पानी व्यर्थ बह कर न जाए हम संपूर्ण समुदाय में भरपूर बरसात होने की कामना करते हैं।

हिरन

सभी पाठको को जय गुरु

जनजातीय स्वराज संगठन हिरन के सभी कर्मठ स्वराज साथीयों व पाठको को जय गुरु, जैसा की हम सभी को विदित है की बारिश होने से पहले हमारे खेत की सफाई तो कर ही ली होगी हमें अब बस पानी का इन्तजार है । खेर आप सभी साथियों से निवेदन है की बीज लगाने से पहले बीज का उपचार करके लगावे ताकि आपकी फसल में रोग न लगे और फसल के लिए पहले से ही छोटी – छोटी बातों का अगर हम ध्यान रखेंगे तो फसल अच्छी होगी ।

सच्चा स्वराज :- सच्चा स्वराज के तहत हिरन इकाई के 356 गाँवो के 332 ग्राम विकास बाल अधिकार समिति की बैठक हुई बैठक में ग्राम चोपाल के अंतर्गत पूर्व बनाये गए प्लान का फ़ोलौअप लिया गया साथ ही नई योजना बनाने पर चर्चा हुई , नई रणनीति बनाई गई । स्थानीय मुद्दों को परम्परागत तौर पर समाधान किया किया एवं जटिल मुद्दों को पेरवी के लिए आगे ले जाया गया । इस माह सभी 09 जनजातीय स्वराज संगठन की मासिक बैठक का आयोजन किया गया जिसमे ग्राम विकास योजना निर्माण, विरासत स्वराज यात्रा आयोजन का अहम मुद्दा रहा । चाइल्ड हेल्प लाइन 1098 के माध्यम से जरूरतमंद, पीड़ित बच्चो को सुविधाए उपलब्ध करवाना और गंभीर परिस्थिति वाले बच्चो के बारे जानकारी देना । ये सभी कार्य करने में मुख्य भूमिका सहजकर्ता, स्वराज मित्र एवं सक्षम समूह, ग्राम विकास बाल अधिकार समिति एवं जनजातीय स्वराज संगठन के सदस्यों की रही । सभी संगठन की बैठक में संगठन की मजबूती हेतु शपथ ली की गई ।

सच्चा बचपन :- सच्चा बचपन के तहत हिरन इकाई के 356 गाँवो में से 336 गाँवो में ग्राम विकास बाल अधिकार समिति की बैठक का आयोजन किया जिसका उदेश्य ग्राम सभा में सम्मलित ग्राम विकास योजना का फोलोअप एवं बालिका शिक्षा और ड्राप आउट बच्चो की सूचि तैयार कर उन्हें शिक्षा से पुनः जोड़ना व अनाथ बच्चो को पालनहार योजना से जोड़ना रहा ।

इस माह 101 ग्राम पंचायतो में बाल सभा का भी आयोजन किया गया जिसमे बच्चो को अपने अधिकारों के प्रति जागरूक करना एवं खेल खेल के माध्यम से बच्चो का शारीरिक और मानसिक विकास करना रहा व बच्चो में नेतृतव क्षमता का विकास करने पर चर्चा की गई ।

सच्ची खेती:- सच्ची खेती कार्यक्रम के तहत 342 सक्षम समूह की बैठक की गई ।

जेसा की इस समय यंहा पानी आने का हो गया तो बीज को उपचार करके ही बोने पर बात रखी बैठक के दौरान बीज विविधता पर अभ्यास(मिश्रित खेती) पर चर्चा , अनुमानित उत्पादन , फसल की स्थिति पर विस्तार पूर्वक चर्चा की गई । वर्तमान परिस्थिति में अधिक उत्पादन पैदावार के लिए समुदाय द्वारा रासायनिक खाद और दवाई व कीटनाशक का उपयोग ज्यादा किया जाने लगा है जिसके कारण लोगो के स्वास्थ्य पर बुरा असर पड़ने लगा है इस हेतु बैठक में महिलाओं को शपथ दिलवाई गई की वे परम्परागत खेती को अपनाये

इसी को ध्यान में रखते हुए संस्था द्वारा जैविक खेती जिसके अंतर्गत वर्मी खाद कम्पोस्ट पिट व कीटनाशक हेतु दशपर्णी दवाई व बीज उपचार आदि पर जनजातीय समुदाय के 356 गाँवो में महिला किसानो का प्रत्येक गाँव में एक समूह बना हुआ है । उस समूह को हर माह प्रशिक्षित करना और उन महिलाओं के द्वारा गाँव और रिश्तेदारी में अन्य किसानो को जैविक खेती के बारे में जागरूक करने का काम किया जा रहा हे । वागधारा संस्था द्वारा सच्ची खेती के अंतर्गत जैविक तरीकों से परम्परागत खेती को वापस बहाल करवाने हेतु प्रयास किये जा रहे है तथा जैविक कीटनाशक जैविक खाद इत्यादि बनाने का प्रशिक्षण भी दिया जा रहा है इस माह में PGS जैविक ग्रुप की कुल 97 मीटिंग हुई है जिसमें जैविक कृषि संबंधी क्रियाकलाप के बारे में किसानों को जागृत किया गया है तथा जैविक कृषि पद्धति अपनाकर इससे होने वाले फायदे के बारे में बताया गया है तथा अधिक से अधिक किसान को जैविक कृषि में रुचि रखते हैं उन्हें सभी जैविक गतिविधियों से जोड़ा जा रहा है ।

नर्सरी – हिरन इकाई की 9 जनजातीय स्वराज संगठन में 6 नर्सरी किसान है जोकि तैयार हो चुकी है और बाजार भी तैयार है हर नर्सरी में 700 पौधे है नींबू, ड्रम स्टिक, बादाम, बम्बू , कटहल आदि ।

मानगढ़

मानगढ जनजातीय स्वराज संगठन इकाई की ओर से सभी पाठकों को जयगुरू!

"हम सभी के लिये जुन माह बहुत ही महत्वपुर्ण है। कृषि क्षैत्र की एक सच्चाई जिसे अक्सर किसान भूल जाते है वो है किसान की मर्जी से मौसम नहीं बदलता है पर किसान को मौसम के अनुरूप खेती को बदलकर लाभ का धंधा बना सकते है।"

आमतौर पर ज्यादातर लोग रूटीन खेती करते है और मौसम की गुगली में फंस जाते है। मौसम के तीन ही विकल्प है बाढ, सुखाड, और संतुलित बारीश इन तीन विकल्पों में से एक ही उपलब्ध होता है। इसलिए स्मार्ट सक्षम किसान को अपनी जमीन की प्रकृति, मिटटी और आगामी मौसम का पुर्वानुमान के अनुसार फसल का चुनाव करे और खेती को लाभ का धंधा बनाये इसके लिए आपको नीचे दिये गये चित्र अनुसार तैयारी करने की जरूरत है।

सच्चा बचपन और हम सच्चा स्वराज साथियों! जिस प्रकार एक अच्छा भवन बनाने के लिए नींव का मजबुत होना जरूरी है। उसी प्रकार एक विकसीत समाज बनाने के लिए यह जरूरी है कि हर एक बच्चे को निःशुल्क और अनिवार्य शिक्षा प्राप्त हो। शिक्षा हर एक बच्चे का मौलिक अधिकार भी है और यह हम सभी का दायित्व भी है कि हर एक बच्चे को अपने नजदीकी विद्यालय में शिक्षा प्राप्त करने का अवसर प्राप्त हो। "शिक्षा कभी न डूबने वाला सुरज है जो अपनी रोशनी चारों तरफ फैला सकता है।" भारत सरकार ने भी इस तथ्य को ध्यान में रखते हुए निःशुल्क और अनिवार्य शिक्षा का अधिकार अधिनियम 2009 में बनाया है। जिसमें सभी सरकारी और गैरसरकारी स्कुलों को निशुल्क शिक्षा, मध्यान्ह भोजन, गणवेश और छात्रवृत्ती की व्यवस्था करने हेतु बाध्य किया गया है।

साथियों, अब यह हमारी जिम्मेदारी है कि दिनांक 20 जुन से आयोजित शाला प्रवेश कार्यक्रम को एक अभियान के रूप में लेते हुए हम सब अपने फले अपने गांव के हर एक बच्चे को अनिवार्य और निःशुल्क शिक्षा के लिये अपने गांव के ही नजदीकि विद्यालय में शिक्षा दिलानें के लिये भेजें और उन्हें शिक्षा से जोडे। शिक्षा ही एक ऐसा अस्त्र है जिससे हम अपने परिवार, अपने समाज को गरीबी, पलायन, सामाजिक बुराइयों से बचाकर एक समृद्ध, विकसीत और खुशहाल बना सकते है। और देश के विकास में अपना योगदान दे सकते है। **याद रहे "पढेगा भारत तो आगे बढेगा भारत"**!

अपनी फसलों के बीच मेड़ पर सेसबनिया, मुंगा जैसे नाइट्रोजन स्थिर करने वाले पेड़ लगाएं।

सच्चा स्वराज

वर्तमान समय में जनजातिय समुदाय में अक्सर देखा जाता है कि बहुत सी जगह पर लोग अपने घरो के आस -पास के जंगल को जला देते है। जिससे मानव जीवन व उसकी आजीविका पर बुरा असर हो रहा है :

1. मिट्टी की उर्वरता में कमी 2. वन सम्पदा को भारी नुकसान 3. बरसात के समय में परिवर्तन कभी ज्यादा तो कभी कम, 4. जंगलो का कम होना । 5. जंगलो को जलाने से निकलने वाले धुएँ से लाखों लोंगो को साँस , ह्रदय व कई प्रकार की बिमारी होने का खतरा । 6. जलवायु परिवर्तन के कारण सूखे और लू की दिनोदिन बढ़ोतरी। 7. पशु पक्षीयो का लुप्त होना 8. जंगल में कई कीमती जड़ीबूटियों का लुप्त होना। 9. आजीविका विहीन हो जाना , जिनकी आजीविका वनोत्पादो पर निर्भर है । तो आइये हम सब मिलकर जंगलो से आम आदमी का सदियों पुराना रिश्ता कायम कर जंगलो को आग और इससे होने वाले नुकसान से बचाना सरकार और वन विभाग के वश में नही है । हम सब को मिलकर जंगलो को बचाना होगा ।

वन अधिकार समिति कि जिम्मेदारियां एवं कार्य

- यदि ग्राम सभाए विरोधी दावो का समाधान करने में समर्थ नही है तो उसे उपखंड स्तर की समिति को अवगत करवाया जायेगा ।
- काबिज भूमि का दोरा करेगी और दावे के स्वरूप, विस्तार तथा सबूतों का व्यक्तिगत रूप से सत्यापन करेगी
- वन क्षेत्र का उपयोग एक से अधिक ग्राम सभाओ द्वारा किया जाता है तो समिति दावो पर विचार करने के लिय सयुक्त बैठक कर सबंधित ग्राम सभाओ को लिखित में अपना निर्णय प्रस्तुत करेगी ।
- समिति दावेदार और गवाह से कोई अतिरिक्त सबूत प्राप्त करेगी ।
- समिति द्वारा प्राप्त किये गये प्रत्येक दावे की लिखित रूप में दावेदार को रशीद देनी होगी ।
- वनाधिकार समिति प्रत्येक दावेदार के कब्जे की भूमि का सीमांकन कर नक्शा तैयार करेगी ।
- जनजातिय समूह, खेती करने वाले सदस्य,चारागाह और घुमन्तु जनजातियो के उन दावो को , जो व्यक्ति सदस्यों , परम्परागत सामुदायिक रूप से प्राप्त हुए हो, उनके अधिकारों के लिय ऐसे समय पर सत्यापित किया जाता है जब ऐसे व्यक्ति , समुदाय या उनके प्रतिनिधि उपस्थित हो ।
- समिति दावे के सबंध में लिये गये निर्णयों को लिखित से रिकॉर्ड करेगी और ग्राम सभा को विचार के लिय प्रस्तुत करेगी ।

मलेरिया मच्छर का जितना प्रचलन बढ़ेगा, उतना ही आपके जीवन को खतरा बढ़ेगा

जन-जन को यह सन्देश पहुंचाना, मलेरिया को दूर भगाना

मलेरिया के लक्षण

- ठंड लगना
- तेज बुखार
- सिरदर्द
- गले में खराश
- पसीना आना
- थकान
- बैचेनी होना
- उल्टी आना

बारिश के समय में गंदगी के कारण मलेरिया की बीमारी न फैले इसको लेकर जून में एंटी मलेरिया माह मनाया जाता है।

प्लाज्मोडियम' नाम के पैरासाइट से होने वाली बीमारी है मलेरिया। यह मादा 'एनोफिलीज' मच्छर के काटने से होता है जो गंदे पानी में पनपते हैं। ये मच्छर आमतौर पर सूर्यास्त के बाद काटते हैं। मलेरिया के मच्छर रात में ही ज्यादा काटते हैं।

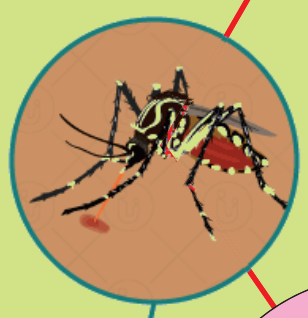

मलेरिया के लक्षण अनुभव होने पर आपको तुरंत डॉक्टर के पास जाना चाहिए। सही समय पर ईलाज नहीं होने पर रोगी कोमा में जा सकता है या फिर उसकी मृत्यु भी हो सकती है

मलेरिया के लिए आयुर्वेदिक औषधियां

- सुदर्शन चूर्ण
- महाकल्यानक घृत
- गुदुच्यादी क्वाथ
- आयुष 64
- अम्रितारिष्ट
- कल्याणक घृत

बारिश के समय में गंदगी के कारण मलेरिया की बीमारी न फैले इसको लेकर जून में एंटी मलेरिया माह मनाया जाता है।

मच्छरों से बचाव के तरीके

- किसी भी हाल में घर में मच्छर ना होने दें। मुमकिन हो तो खिड़कियों और दरवाजों पर महीन जाली लगवाएं।
- लहसुन का ज्यादा से ज्यादा प्रयोग करें। इसकी गंध से मच्छर दूर भागते हैं।
- शाम के समय पूरी आस्तीन के कपड़े पहनकर ही बाहर निकलें।
- नीम का तेल भी मच्छर भगाने में बड़ा उपयोगी है। सोने से पहले थोड़ा सा नीम का तेल शरीर पर लगा लेने से मच्छर नहीं काटते।
- घर या ऑफिस के आसपास पानी जमा न होने दें। गड्ढों को मिट्टी से भर दें। रुकी नालियों को साफ करें।
- अगर पानी जमा होने से रोकना मुमकिन नहीं है तो उसमें पेट्रोल या केरोसिन ऑइल डालें।

सफलता की कहानी

नाम :- केसर देवी, ग्राम पंचायत :- देलवाड़ा लोकिया, गाव :- घटियन, उम्र :- 40 वर्ष, मकान :- कच्चा

बांसवाड़ा जिला कार्यालय से पहाड़ियों में बसे ग्राम पंचायत देलवाड़ा लोकिया के गाँव घटियन में रहने वाली केसर देवी आजकल गांव में प्रेरणा स्त्रोत बनी हुई है। जब वागधारा संस्था ने 2018 में गांव के अंदर सक्षम समूह का गठन किया था। उस समय इस गांव से 20 महिलाएं समूह की सदस्य थी। उसी समय से केसर देवी इस समूह की मुख्य सदस्य है। केसर देवी ने समूह की बैठकों से प्रेरित होकर कुछ करने की ठानी। पहले तो केसर देवी पोषण बाड़ी के बारे में बिल्कुल नहीं जानती थी। लेकिन बार-बार बैठकों में भाग लेकर प्रेरित हुई और अपने घर पर पोषण बाड़ी लगाने का निर्णय लिया। इस वर्ष केसर देवी ने अपने घर में प्याज की खेती की घर के आस-पास इस खेती से लगभग 300 किलो प्याज प्राप्त हुआ। केसर देवी ने घर उपयोग को छोड़कर शेष प्याज बाजार में बेचे उससे 12000 हजार की आमदनी हुई। साथ ही केसर देवी ने कुछ स्थान पर लसन बोया था उसकी भी काफी अच्छी पैदावार रही। केसर देवी ने इस बारे में गांव की अन्य महिलाओं को बताया और आज केसर देवी पोषण बाड़ी के लिए गांव वालों को प्रेरित कर रही है। वागधारा संस्था ने केसर देवी के कार्य की सराहना की और बताया कि गांव की सभी महिलाएं केसर देवी बन सकती है,लेकिन हमें कुछ करने की ठान लेनी चाहिए। केसर देवी का कहना है आने वाले समय में वे अपने खेतों में अनेक प्रकार की सब्जियां लगायेगी। जिससे घर मे अच्छी आमदनी होगी जिससे घर चलाना और बेहतर होगा । केसर देवी सक्षम समूह की सभी बैठकों में उत्सुकता के साथ भाग लेती है और सक्षम समूह की सभी महिलाओं को साथ लेकर आती है। केसर देवी के इस प्रयास से गाँव के अन्य लोग काफी प्रेरित हो रहे है। इस बारे मे इस माह बैठक में केसर देवी ने अच्छे से सभी समूह की महिलाओं को जानकारी दी।

वागड़ रेडियो 90.8 FM
वागधारा, कुपड़ा
SCAN ME
अधिक जानकारी के लिये सम्पर्क करें-
वागड रेडियों 90.8 FM, मुकाम-पोस्ट कुपड़ा, वागधारा केम्पस, बाँसवाड़ा (राज.) 327001
फोन नम्बर है - 9460051234 ई-मेल आईडी -radio@vaagdhara.org
यह "वातें वागधारा नी" केवल आंतरिक प्रसारण है ।

। मार्गदर्शक : दीपक शर्मा, गगन सेठी, नरेन्द्र कुमार । मुख्य संकलक : परमेश पाटीदार । सहसंकलक : जागृती भट्ट ।